कलीसिया अध्याय 41

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	*[शान्त समय]* **1 यूहन्ना 1-3**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (1यूहन्ना 1-3) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट)	*[मसीही माता-पिता]* **(5) नीतिवचन 13:24**

दो दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(5) अनुशासन के द्वारा प्रेम। नीतिवचन 13:24। जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है।

4	**शिक्षा** (85 मिनट)	*[कलीसिया की सेवकाई को बहाल करना]* **तलाक और पुनर्विवाह**

परिचय दें। यह शिक्षा तलाक और पुन: विवाह के बारे में है। हम खाजेंगे कि बाइबल तलाक के बारे में क्या कहती है। हम अध्ययन करेगें व्यभिचार और यौन अनैतिक शब्दों के बारे में, और जिसका तलाक हुआ है उसका पुन: विवाह हो सकें उस पर विचार करेगें।

परमेश्वर कहता है "मैं स्त्री त्याग से घृणा करता हूँ और उस भी जो वस्त्र को उपद्रव से ढांपता है" (मलाकी 2:16) परमेश्वर तलाक को विवाह में सहभागी के विरोध में इसे उपद्रव के कार्य के रूप में दिखता है। और वह इससे घृणा करता है। यीशु मसीह ने सिखाया "और मै कहता हूँ, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी और कारण से अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करें, वह व्यभिचार करता है।"(मत्ती 19:9) "उसने उनसे कहा जो कोई अपनी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे तो वह उस पहली

के विरोध में व्यभिचार करता है; और यदि पत्नी अपने को छोड़कर दूसरे से विवाह करे तो वह व्यभिचार करती है।"(मरकुस 10:11-12)

इसलिए, लोगों के पापमय एवं टूटे हुए होने की वजह बाइबल के परमेश्वर ने इन तीन करणों की वजह तलाक की अनुमति दी है।

- शारीरिक कारण: यौन सम्बन्ध की अनैतिकता और उपद्रव।
- आत्मिक कारण: आत्मिक व्यभिचार (व्यभिचार और गलत धर्म (मत्ती 19:8-9)
- सामाजिक कारण: आत्मिक बेजोड़ता (सामंजस्य न होने के कारण क्योंकि साथी गैर मसीही होने की वजह से)(1 कुरिन्थियों 7:12-16) असमांजस्य इस कारण से है क्योंकि एक व्यक्ति मसीह नहीं है।

क. तलाक से सम्बन्धित पुराने नियत की शिक्षा।

पुराना नियम तलाक की निन्दा करता है, परन्तु फिर भी कुछ परिस्थितियों के अधिनता में तलाक की अनुमति दी गई।

1. राष्ट्र का नागरिक कानून- इस्राएल का राज्य।

पढ़ें। व्यवस्थाविवरण 22:13-19, 28-29, 24:1-4, मत्ती 19:8।

खोजें और चर्चा करें। इस्राएल राज्य में यौन अनैतिकता और तलाक के विषय में सामान्यत: क्या कानून थे।

ध्यान दें। जो कानून व्यवस्थाविवरण में मिलते है वह इस्राएल में सामान्यत: लागू किए गये और इस्राएल के आसपास के देशों में भी सामान्यत: यह कानून थे लेकिन जिस तरह से इन कानूनों को इस्राएल राष्ट्र के नागरिक कानून में शामिल किया गया था और पुराने नियम में दर्ज किया गया है कि वह अपने अन्यजाति तत्वों से शुद्ध थे।

और यह कि वह परमेश्वर के लोगों के रूप में इस्राएल में सामाजिक सम्बन्धों को नियंत्रित करने वाले कानूनों को अधिक सटीक था अधिक सटीक वर्णन करते हैं। जबकि पुराने नियम के समय के दौरान, पूरी दुनिया में अधिक स्वतंत्रता थी और साधारत: पत्नियों को तलाक देना "क्या किसी और हर एक कारण"(मत्ती 19:3)। इस्राएल के इन सामान्य नागरिको कानूनों ने इस्राएलियों की स्वतत्रंता पर अंकुश लगाया!

(1) तलाक से मनाह।

व्यवस्थाविरण 22 में पति द्वारा पत्नी पर झूठा इल्जाम लगाया गया कि जब विवाह हुआ तब वह कुंवारी नहीं थी तो उसे उच्च दण्ड देना पड़ा और तलाक देने के लिए भी मना कर दिया गया।

(2) पुन: विवाह के लिए मनाह।

उसी प्रकार व्यवस्थाविवरण 24:1-4, यदि पति ने अपनी पत्नी को तलाक दिया है और उस स्त्री ने किसी और पुरुष से दुबारा विवाह कर लिया हो तो उससे पुनर्विवाह करने के लिए मना किया गया है पुनर्विवाह के

लिए मना करने के कारण उसकी औपचारिक अवहेलना नहीं हो सकती क्योंकि वह सिर्फ शाम तक ही चली (लैव्यव्सवस्था 15:18) वह निरन्तर अशुद्ध नहीं थी कि वह उससे विवाह करे, पुनर्विवाह के लिए इस विवाह में मना का कारण नैतिक कंलक था। पहले पति का कार्य परमेश्वर की दृष्टि में घिनौना था और भूमि पर पाप ले आया, परमेश्वर ने इसे बाइवल आधारित पवित्र विवाह की सहभागिता के उल्लघंन करने पर पछताता है। यीशु के अनुसार, मूसा तलाक के विषय में सहमत नहीं था। लेकिन इस्राएल में पहले से मौजूद एक बुरी प्रजा को नियमित करने के लिए तलाक की अनुमति दी।

व्यवस्थाविवरण 24:1-4 से एक इकाई के रूप में लिया गया इसने निश्चित रूप से तलाक को प्रोत्साहित किया।

2. यीशु के समय में यहूदियों द्वारा इस नागरिक कानून की पारंपरिक व्याख्या।

पढ़ें। व्यवस्थाविवरण 24:1।
इस्राएल के सामान्य कानून के यह निर्धारित किया कि एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है "जब उसको अपनी पत्नी के बारे में कुछ अशोभनीय पता लगता था।"

प्रश्न। "कुछ अशोभनीय" का क्या अर्थ था(इब्रानी: इरबात दावार) पुराने नियम में?
सिखाएं। व्यवस्थाविवरण 24:1,4 बताता है "यदि कोई पुरुष किसी स्त्री से विवाह कर लें और उसके बाद उसमे कुछ लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिए त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे, उसके अशुद्ध के बाद उसे पुन: अपनी पत्नी न बनाने पाए।"

इस्राएल में सदुकी और फरीसी इन बातों पर बहस करते थे कि तलाक देने कोई सम्भवत: कारण डूड सके! उन्होनें अपनी राय उस बुनियाद उस मनुष्य(रब्बी) की राय पर रख की जो उनसे बहुत पहले जिया था यहूदियों के बीच के दो प्रमुख विद्यालयों ने "कुछ आशोभनीय" शब्दों के अर्थ के बारे में व्यापक रूप से अलग राय दी थी।

(1) हिलेल का विद्यालय (50 इ.पू. सन् से 10 ई0. सन्)।

हिलेल विद्यालय के अनुसार "कुछ अशोभनीय" का अर्थ पाने के लिए कुछ भी प्रतिकारक या नाराज़ करने वाली कोई भी बात बोलना था(मत्ती 19:3) यह विद्यालय किसी भी कारण की वजह से तलाक की अनुमति देता था यदि पत्नी में कोई भी छोटी सी शारीरिक अपन्गता हो या दिखने में अच्छी न हो या पति किसी दूसरी स्त्री को ज्यादा सुन्दी देखता है, तो वह उसे तलाक दे सकता है।

यह विद्यालय भड़किले कारणों के लिए तलाक की अनुमति देता था उदाहरण के लिए, पति- पत्नी को त्याग सकता था यदि उसने गलती से पति को थोड़ा सा जला हुआ खाना खिला दिया तो या उसने घर में ऊंची आवाज से बात की और पड़ोसियों ने सुन लो हो तो भी तलाक दे सकता है। इत्यादि

(2) शमाई का विद्यालय (50 इ.पू. सन् से 10 ई0. सन्)।

शमाई विद्यालय के अनुसार "कुछ अशोभनीय" का अर्थ नैतिक विकृति कामुकता, अशुद्ध और व्यभिचार तक ही सीमित था। कामुकता अपने आपको केवल इन्द्रियों को सौंप रही है। और बुद्धि औश्र आत्मा के लिए नहीं और यौन सम्बन्ध के आन्नद स्वयं भागी होना विवाह से पहले अपने कुंवारे पन को खो देना अशुद्धता है। अपने विवाहिक सहभागी के अलावा किसी और व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध बनानन व्यभिचार है। यीशु मसीह बुनियादी शमाई विद्यालय के साथ सहमत थे।

3. इस नागरिक कानून की सही स्पष्टीकरण।

खोजें और चर्चा करें। पुराने नियम में मूसा द्वारा लिखित कौन सा कारण सामान्य नागरिक कानून में तलाक की अनुमति देता है।

(1) तलाक की अनुमति किसी भी भड़कीले कारण और व्यभिचार के लिए नहीं दी गई।

पढ़ें। व्यवस्थाविवरण 22:20-27। जो शब्द "कुछ अशोभनीय" यह पहले तो व्यभिचार के लिए इस्तेमाल नहीं किया गया, क्योंकि व्यभिचारियों की तो हत्या की जानी थी(लैव्यव्यवस्था 20:10) और न ही सामान्यत: तलाक। कुछ अनुवादक सोचते हैं कि यह मुहावरा किसी बिमारी के बारे में बोलता है, जैसे कि त्वचा में खुजली या शरीर में अपंगता, परन्तु यह मुहावरा भड़कीले कारण जो हिलेल विद्यालय मानता है उससे कई अधिक गम्भीर है और व्यभिचार से कुछ कम कब।

(2) "नग्नता की रिर्पोट" के लिए तलाक की अनुमती दी गई थी।

पढ़ें। व्यवस्थाविवरण 4:1। क्योंकि "कुछ अशोभनीय" शब्द का वास्तविक अर्थ है "नग्नता की रिर्पोट" सबसे अच्छा अर्थ शायद अशोभनीय मामला है। अपमानजनक प्रतिकारक यौन व्यवहार जैसे वासनात्मक होना, अश्लील व्यवहार, गैर कानूनी यौन अनैतिक व्यवहार से परहेज नहीं करना।

निष्कर्ष यह है कि पुराना नियम अशोभनीय व्यवहार से सम्बन्धित नग्नता और यौन सम्बन्ध के कारणों को जानने के बाद तलाक अनुमति देता है। इसका अर्थ नये नियम में यीशु की शिक्षाओं के नज़दीक की है। परन्तु यह कि यीशु ने कहा अशोभनीय व्यवहार न सिर्फ स्त्रीयों का परन्तु पुरुषों का भी।

4. विवाह और तलाक के विषय में मलाकी भविष्यद्वक्ता की शिक्षाएं।

पढ़ें। मलाकी 2:10-16।

खोजें और चर्चा करें। मलाकी भविष्यद्वक्ता के अनुसार परमेश्वर विवाह और तलाक को कैसे देखते हैं।

ध्यान दें। तलाक को निश्चय तौर पर पुराने नियम में सामान्य नहीं माना जाता था। परमेश्वर तलाक से घृणा करते हैं। वह न केवल कुछ पत्नियों के व्यवहार की निन्दा करते हैं, वह इस्राएल में कुछ पतियों के अनैतिक व्यवहार की भी निन्दा करते हैं।

(1) गैर कानूनी विवाह।

इस्राएल मैं कुछ अविवाहित पुरुष विदेशी ईश्वरों पर विश्वास करने वाली लड़कियों से विवाह करके परमेश्वर की वाचा को तोड़ रहे थे(इस प्रकार: अविश्वासी, गैर-मसीही)। उन्होनें परमेश्वर के भवन को अपवित्र किया। जो मन्दिर की इमारत से सम्बन्ध नहीं रखता परन्तु इस्राएल जो परमेश्वर के पवित्र लोग हैं। परमेश्वर का पवित्र समुदाय (कलीसिया)(इफिसियों 2:19-22)!

इस प्रकार के समझौते करने वालों का दण्ड था कि उनके पैदा हुए लड़को को सामाजिक और धार्मिक रूप से इस्राएल के नागरिकता से वंचित रखना था।

इनको प्रवक्ता और गवाह के रूप में किसी व्यवसाय या न्यायिक प्रकिया में किसी प्रकार से कोई भी कार्य करने की अनुमति नहीं थी और उन्हें मन्दिर में बलिदान लाने से भी अलग कर दिया था।

(2) गैर कानूनी तलाक।

इस्राएल में कुछ विवाहित पुरुष(पति) अपनी पत्नियों को त्यागना या तलाक देने के द्वारा अपने पत्नियों के साथ विवाह की वाचा को तोड़ रहे थे। जब बाइबल में पुरुष और स्त्री विवाह करते हैं वे परमेश्वर की उपस्थिति में "गवाह" के रूप में खड़े होते हैं और परमेश्वर ने उन्हें *एक* किया है(उत्पत्ति: 2:24, मत्ती 19:3-6)। परमेश्वर भी "गवाह है" जब पति अपनी पत्नी से विश्वास घात करता है और तलाक देता है परमेश्वर पत्नी को "तेरी जवानी की पत्नी, तुम्हारी संगनी, साथी, मित्र" और तेरी वाचा की पत्नी(पद 14)।

विवाह को वाचा कहने के द्वारा (इब्रानियों: बेरिट) भविष्यद्वक्ता मलाकी विवाह को पवित्र और शुद्ध परमेश्वर के संस्थान के रूप में घोषित करता है(मलाकी 2:14)। इस्राएल उस समुदाय का नाम है जिसे परमेश्वर ने इस संसार से अपने लिए अलग किया है परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री दोनों को मांस(देह) और आत्मा के रूप में सृजा है, क्योंकि वह "अलौकिक बीज और संतान खोज रहा था (इब्रानी: जेरा इलोहिम) वह है" उसका उद्देश्य था कि संसार में पवित्र लोगों को बनाएं, इस संसार में बाइबल के परमेश्वर का विश्वासी समुदाय(मलाकी 2:15)। परमेश्वर चेतावनी देता है कि जो अविश्वासयोग्यता के द्वारा जो अपनी पत्नी को त्यागता है या तलाक देता है तो वह विवाह के सम्बन्ध में परमेश्वर के उद्देश्य को बिगाड़ता है। परिवार और उसका समुदाय(लोग और कलीसिया) इस संसार में परमेश्वर तलाक से घृणा करता है। परमेश्वर तलाक को हिंसा का अपराध(इब्रानी: खमास) कहता है इतना गम्भीर जैसे अन्यायपूर्ण हत्या(मलाकी 2:16)!

(3) परमेश्वर तलाक से घृणा करता है परन्तु जो पश्चताप करते हैं उन पर दयावन्त है।

परमेश्वर तलाक से घृणा करता है जैसे वह झूठ और दृष्टता की योजनाओं से घृणा करता है(नीतिवचन 6:16-19) जबकि परमेश्वर तलाक से घृणा करता है, पर वह गिरी हुई मानव जाति की वास्तविकता और टूटे हुए संसार के बारे में भी जानता है। परमेश्वर व्यभिचारियों के लिए दयावन्त है। यह उनके लिए जो पुरुष स्त्री तलाक के दोषी है परन्तु उसके बाद पश्चाताप करते हैं। ध्यान दें कैसे दाऊद व्यभिचार करता है(2 शमूएल 11 अध्याय) और वह कैसे पश्चाताप करता है(भजन संहिता 51:1-17) साथ यह भी ध्यान दें कि कैसे परमेश्वर उसे क्षमा करता है, उसके पश्चाताप भी उसे व्यभिचार के परिणामों को भुगतना पड़ता है।(2 शमूएल 12:13-14) और परमेश्वर त्यागी हुई स्त्री के प्रति तरस से भर जाता है। अर्थ, जो स्त्री तलाक का

दोषी है, परन्तु पश्चाताप करने के बाद दृढ़ता के साथ परमेश्वर में बनी रहती है(यशायाह 54:1, 49:19-21)।

ख. तलाक के सम्बन्ध में यीशु मसीह की शिक्षाएं।

1. यीशु विवाह और तलाक को कैसे देखते हैं।

पढ़ें। मत्ती 19:3-9, 1 कुरिन्थियों 7:10-11।

खोजें और चर्चा करें। विवाह और तलाक के बारे में यहूदियों और यीशु मसीह का इस मामले के प्रति क्या दृष्टिकोण है?

ध्यान दें।

(1) यहूदी तलाक की प्रकिया नहीं परन्तु विवाह के प्रति परमेश्वर का अध्यादेश महत्वपूर्ण है।

जब यीशु इस दुनिया में थे तब नैतिकता का ढीला यहूदी सदूकी और फरीसी तलाक के तरीके पर पहले से काबिज थे, बन्सपथ कि विवाह के लिए परमेश्वर का अध्यादेश। वे तर्क देते हैं कि यदि कोई अपनी पत्नी के तलाक दें या उसे भेज दें तो उसे कम से कम उसे सही ढंग से तलाक का प्रमाण पत्र देना चाहिए। वे सोचते है कि परमेश्वर की दृष्टि में एक कागज का टुकड़ा न्यायिक तलाक का कागज विवाह की वाचा और विवाह के बन्धन का समाधान कर सकता है। वे गलत थे। परमेश्वर तलाक से घृणा करता है। वह व्यभिचार पतियों और पत्नियों को दण्ड देगा यीशु का दृष्टिकोण यह नहीं था कि वह तलाक कह प्रकिया को सिखाएं परन्तु वह चाहता है कि परमेश्वर द्वारा विवाह के अध्यादेश पर दें। तलाक के सम्बन्धित यीशु मसीह की शिक्षा परमेश्वर के विवाह के अध्यादेश को तोड़ना बिल्कुल भी नहीं है। सदूकी वह और फरीसियों ने अपने विवाह के अपवाद में काबिज कर लिया था, परन्तु यीशु मसीह विवाहित बनें रहने के सिद्धान्त पर जोर दिया। यीशु मसीह ने परमेश्वर के विवाह के अध्यादेश ने पुरुष और स्त्री के विवाह के समय उन दोनों के मध्य में घटता है, लेकिन यह परमेश्वर की अधिकारिक आज्ञा है जो उन विवाह करने वालों के बीच में होनी चाहिए। परमेश्वर का मध्यदेश हर समय संसार के हर संस्कृति में वैध है।

आदम और हव्वा को लाने के द्वारा परमेश्वर ने विवाह में स्त्री को पति दिया पति दिया को यह आज्ञा देने के द्वारा कि वह माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहे। परमेश्वर पुरुष(और स्त्री को) सीधे तौर से अपने अधिकार की अधिनता में सब देता है। परमेश्वर पत्नी को जिम्मेदार बनाता है कि वह आत्मा और देह में एक बनें रहें। स्त्री को यह महसूस करना चाहिए कि परमेश्वर ने उसे विवाह में दे दिया है। और पुरुष को महसूस करना चाहिए कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी है कि वह उसे लेकर विवाह मे उससे पूरे जीवन भर मिला रहे।

(2) गैर कानूनी तौर से तलाक के द्वारा और बाहरी व्यभिचार के दखल अन्दाजी के द्वारा विवाह के बन्धन को तोड़ना।

इसलिए यीशु ने स्पष्ट रूप से सिखाया कि सृष्टि के समय परमेश्वर ने तलाक की अनुमति नहीं दी। उसने आज्ञा दी "अत: वह अब से दो नहीं परन्तु एक तन हैं इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे"(वर्तमान सातव्य काल और सक्रिय आवज निषेध)(मत्ती 19:6)।

बाइबल में विवाह का अर्थ इससे बिल्कुल भी कम नहीं है कि परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को एक साथ एकता के सूत्र में जीवन भर के लिए खोज है। तलाक बाइबल में विवाह से बचने के लिए एक पीछे से जाने का द्वार नहीं है। यदि पति या पत्नी विवाह का बन्धन तोड़ते हैं और यदि कोई दूसरा बाहरी व्यक्ति उनके विवाह में दखल अन्दाजी करता है और उनके विवाह के बन्धन तोड़ने का कारण बनता है ता वह व्यक्ति व्यभिचार का दोषी है। एक तरफ, दोषी व्यक्ति परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है। क्योंकि वह परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ते हैं, और परमेश्वर की विवाह की वाचा को तोड़ते हैं। और दूसरी तरफ, दोषी व्यक्ति अपने विवाहिक साथी के विरुद्ध बहुत बड़ा पाप करते हैं क्योंकि वे बहुत ज्यादा और चोट पहुंचाते है। यीशु उस दोषी व्यक्ति को व्यभिचारी कहते हैं 1 कुरिन्थियों 6:9-10 के अनुसार बिना पश्चाताप के किया हुआ व्यभिचारी परमेश्वर के राज्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

2. तलाक के लिए वैध कारण।

पढ़ें। मत्ती 19:9, 5:31-32।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह के अनुसार कौन से कारण में परमेश्वर तलाक की अनुमति देता है?

ध्यान दें। नये नियम में भी परमेश्वर यीशु मसीह में मानव जाति के पतन और टूटी हुई दुनिया की वास्तविकता को मानते हैं, जबकि यीशु मसीह व्यभिचार की निन्दा करते हैं(मत्ती 15:18-19) वह मसीहियों को कोई आज्ञा नहीं देता कि वह अपने व्यभिचारी साथी से तलाक लें सबके ऊपर पाप से पश्चाताप हो और अपने विवाह के साथ जारी रखें(मत्ती 19:6)।

परन्तु कुछ परिस्थितियों में दोषी व्यक्ति(व्यभिचारी पश्चाताप नहीं करता, और परिवर्तित नहीं होना चाहते बल्कि वह पुरुष स्त्री अपने अनैतिक यौन सम्बन्धों, आत्मिक(धार्मिक) अनैतिकता और हिंसात्मक कार्यो को जारी रखता है। यहां तक कि वे अपने विवाहिक साथी को छोड़कर जिनके साथ उनका विवाह भी नहीं हुआ है उनके साथ दोहरे सम्बन्धों को रखना शुरू कर देते हैं। जिसको "साथ रहना" कहते हैं। ऐसी परिस्थिति में यीशु मसीहियों को (बेगुनाह व्यक्तियों को) अनुमति देता है कि वह व्यभिचारी को तलाक(दोषी व्यक्ति) दे।

यीशु मसीह तलाक की अनुमति विवाहिक अविश्वासयोग्य में ही देते हैं मत्ती 19:9 मे वह सिखाते हैं और "मैं तुझसे कहता हूँ कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे वह व्यभिचार(यूनानी: पोरनिया) करता है (अपनी पहली पत्नी के विरुद्ध)(यूनानी मोईछाओ)" मत्ती 5:31-32 में यीशु सिखाते हैं "यह भी कहा गया था कि जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे तो उसे त्याग पत्र दे परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ दे तो वह उस से व्यभिचार करवाता है। और जो कोई इस त्यागी हुई स्त्री से विवाह करे वह व्यभिचार करता है।" तौभी, यीशु एक ही मामले में तलाक की अनुमति देते हैं और वह है विवाह में अविश्वासयोग्यता।

3. विवाह में अविश्वासयोग्यता(पोरनिया) और व्यभिचार(मोईछोया) का अर्थ।

प्रश्न। "विवाह में अविश्वासयोग्यता" का अर्थ क्या है?
सिखाएं।

(1) शारीरिक रूप से (पोरनिया) शब्द का अर्थ है बाइबल में यौन सम्बधों से सम्बन्धित कार्य चाहे वह किसी भी आकृति का क्यों ना हो।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 18:1-6, 20, 22-23, व्यवस्थाविवरण 23:17-18।
अनैतिक यौन सम्बन्ध(यूनानी: पोरनिन्या) हर प्रकार के यौन सम्बन्धों से सम्बन्धित कार्यो को शामिल करता है कि परमेश्वर उसे गैर कानूनी मानता है, यह यौन सम्बन्धों के बारे में यौन सम्बन्धों की लालसा रखना भी अन्यायपूर्ण है(मत्ती 5:27-30, 2 पतरस 2:14,18)। गैर कानूनी यौन सम्बन्धों के शब्द(इफिसियों 5:3-5) यह हर प्रकार के गैर कानूनी यौन सम्बन्धों के व्यवहार के बारे में जैसे अश्लील चित्र देखना, हस्तमैथुन, लाड़ प्यार करना(देह को छूकर उस व्यक्ति के लिए जिससे उनकी शादी नहीं हुई है उसके प्रति यौन इच्छाओं को उलेजित करना)(नीतिवचन 5:15-21, 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8, विवाह से पहले यौन सम्बन्ध(व्यवस्थाविवरण 22:21,22-24, इब्रानियों 13:4 वेश्यावृत्ति(नीतिवचन 5:7-13) कुटुम्बियों व्यभिचार(लैव्यव्यवस्था 18:6) व्यभिचार(लैव्यव्यवस्था 18:20, रोमियों 1:21-27) पशुगामी(लैव्यव्यवस्था 18:23) बाल यौन शोषण, बलात्कार(व्यवस्थाविवरण 22:25) इत्यादि

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 6:10-11।
हम नहीं कह सकते कि परमेश्वर लोगों को एक दूसरे को देते है। समलैंगिक सम्बन्धों में भी क्योंकि परमेश्वर ऐसा कुछ भी नहीं जो उसने बाइबल में कहा है और उसके विरोध में बोले। यह लोग थे जो स्वयं को समलैंगिक सम्बन्धों के लिए देते है परमेश्वर दो विपरीत लिंगों को एक दूसरे के लिए देता है "मसीही विवाह" इस प्रकार का है कि जब परमेश्वर मसीही पुरुष को एक मसीही स्त्री को लिए एक दूसरे के बन्धन में बांध देता है। (उत्पत्ति 2:24, मत्ती 19:1-12, इफिसियों 5:31-32, 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8) परमेश्वर उन लोगों को चेतावनी देते हैं (उनके प्राकृतिक झुकाव या अभिविन्यास की परवाह किये बिना) और करते चले जाते हैं(अपने को विनम्र करता) उन चीजों के लिए जिसके लिये मना किया गया है वे परमेश्वर के राज्य में शामिल नहीं होगा(यूनानी शब्दकोष) अनैतिक सम्बन्ध, व्यभिचार, पुरुष वेश्यावृत्ति, समलैंगिकता, अपराधी(न्यू इन्टरनैशनल वर्शन) कुछ मसीही लोग वहां थे परन्तु घुले हुए, पवित्र, इसी की तो इच्छा परमेश्वर रखता है, परिवर्तित होना और पवित्रीकरण।

पढ़ें मत्ती 5:32, मरकुस 10:11-12, इब्रानियों 13:4।
यौन अनैतिकता में एक विवाहित होने से पहले सभी तहह के यौन सम्बन्ध-सम्बन्धि कार्य शामिल है। विशेष रूप से व्यभिचार जो विवाह रिश्ते से पहले सम्भोग का कार्य है। और इसमे एक शादी के बाद विपरीत लिंग के साथ सभी अवैध सम्बन्ध शामिल है।(जो किसी के साथ सम्भोग करने का कार्य करता है जो शादी का

साथी नहीं है(पति या पत्नी)। सक्षेंप में बाइबल किसी के भी विवाह के साथी को छोड़कर किसी और के साथ सम्भोग करने से मना करती है(विपरीत लिंग के)। इब्रानियों 13:4 बताता है।
"विवाह सब में आदी की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों(यूनानी: पीरनोस) और परस्त्रीगामियों(यूनानी: मोईखोस) का न्याय करेगा।"

व्यभिचार और अनैतिक यौन सम्बन्धों के बीच निम्नलिखित भिन्नताएं पाई जाती है- "व्यभिचार"(यूनानी: मोईछिया) "अनैतिक यौन सम्बन्धों" का एक पक्ष है(यूनानी: पोरनिया) और सभी प्रकार के यौन व्यवहार को सन्दर्भित करता है जो पवित्र विवाह के बन्धन को तोड़ता है। व्यभिचार किसी अन्य मनुष्य के पति या पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध का हर रूप है। व्यभिचार गैर कानूनी है। किसी दूसरे व्यक्ति की शादी में दखल देना किसी दूसरे व्यक्ति की पत्नी के साथ छेड़खानी या छेड़खानी की कोशिश करने का हर रूप, दूसरे के पति को बहकाना किसी अन्य के साथ यौन सम्बन्ध बनाना व्यभिचार तलाक का दोषी भागीदार है, व्यभिचार एक ही समय में कई पत्नियों से विवाह बहुविवाह है या एक ही समय में एक से अधिक पति से विवाहित होना(बहुपत्नी, बहुपति) व्यभिचार रखैल होना या रखैल रखना दोनों व्यभिचार है। इस प्रकार जबकि "यौन अनैतिकता" शब्द विशेष रूप सन्दर्भित करता है जो किसी व्यक्ति के विवाह से पहले कार्य करता है। शब्द व्यभिचार यौन सम्बन्ध से सम्बन्धित सभी प्रकार के कार्यो को सन्दर्भित करता है।

बेशक, प्राकृतिक यौन इच्छा अपने आपमे पापपूर्ण नहीं है। यह परमेश्वर द्वारा दी गई इच्छा है लेकिन इसे परमेश्वर द्वारा ठहराई गई सीमाओं के भीतर नियंत्रित किया जाना चाहिए।

हालांकि, मनुष्य के पाप में गिरने के कारण कामवासना भी अभिलाषाओं में बदल गई(2 पतरस 2:14-18, 1 पतरस 2:11) यद्यपि यौन इच्छा, दुलारना और यौन क्रिया शादी के रिश्ते के अन्दर पाप नहीं है। वे शादी के पहले और बाहर पाप है क्योंकि वे ऐसी गतिविधियां बन जाती है जो परमेश्वर के उद्देश्य को चूक जाते हैं और आमतौर पर लोगों को पाप में गिरने का कारण बनते हैं(याकूब 4:17, मत्ती 18:7-9)।

(2) आध्यात्मिक रूप में "पोर्निया" शब्द का अर्थ है गैरकानूनी धार्मिक सम्बन्धित कृत्यों का हर रूप है।

पढ़ें यिर्मयाह 3:6-10, यहेजकेल 16:1-63, 23:1-49।

शिक्षा।

व्यभिचार (यूनानी: मोचिया) में धार्मिक सम्बन्धित कृत्यों के हर रूप को शामिल किया जाता है जिसे परमेश्वर गैर कानूनी मानता है। इसमे धर्म के हर रूप को शामिल किया गया है बाइबल में क्या प्रकट किया गया है। आध्यात्मिक अनैतिकता या गैर कानूनी धर्म की शुरुआत परमेश्वर के स्वधर्मत्याम से होती है जिन्होनें स्वयं को बाइबल में प्रकट किया है।

परमेश्वर की अराधना के अलावा सभी धर्म जो स्वयं को पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं में प्रकट करते हैं, और यीशु मसीह में वे धार्मिक अनैतिकता है। सारी अराधना में केवल मूर्तियों की पूजा(ईश्वरों की छवि जैसे बुद्ध और नटराज हिन्दुओं के नृत्य के ईश्वर) की अनैतिक धार्मिक है। धार्मिक अनैतिकता में मन्दिर के

वैश्यावृत्ति को भी शामिल करता है। हर प्रकार का भोगवाद हर एक शिक्षा जो बाइबल सिखाती है उसका जो विरोध करते हैं और हर एक हिंसा जो धर्म के नाम पर की जाती है तलाक की तरह(मलाकी 2:14-16) उनको अपने शब्दों से घायल करना(लैव्यव्यवस्था 19:27-28, 1 राजा 18:28) धर्म अतिवाद आंतकवाद के द्वारा परमेश्वर का इरादा था कि मसीह विवाह एक घोषणा होगी और यीशु मसीह और कलीसिया के बारे में एक तस्वीर है(इफिसियों 5:22-23)। इस प्रकार विवाह में हिंसात्मक भी आत्मिक अनैतिकता है। इस प्रकार विवाह में हिंसा आध्यात्मिक रूप से अनैतिक है। हिंसा जो विवाह को तोड़ देती है उसे व्यभिचार माना जाना चाहिए किसी के वैवाहिक जीवन के प्रति अविश्वास के रूप में माना जाए। इसीलिए धर्म में(धार्मिक अतिवाद और आतंकवाद) हिंसा आत्मिक अनैतिकता है। लोग अपने उस ईश्वर के समान बन जाते हैं जिसकी वह पूजा करते हैं(भजन संहिता 115:8) तौभी धार्मिक अतिवादी जो झूठ बोलते हैं, बलात्कार करते हैं और हत्या करते हैं यह इस बात को दिखाता है कि जिस ईश्वर की वह पूजा करते हैं वह झूठे और बलात्कारी और हत्यारे हैं(यूहन्ना 8:44)!

यह मूर्तिपूजा और धार्मिक अविश्वासयोग्यता भी परमेश्वर के प्रति जिसके कारण परमेश्वर को पहले इस्राएल को दण्डित करना पड़ा(पूर्वी राज्य) और उसके बाद यहूदा(दक्षिणी राज्य) दूसरे देशों में बन्दी बनाने के द्वारा(असीरिया और बाबूल)।

(3) वैवाहिक विश्वासघात के विषय में यीशु मसीह के शिक्षण के बारे में निष्कर्ष।

पढ़ें इब्रानियों 13:4, प्रकाशितवाक्य 21:8।

"वैवाहिक विश्वासघात" यौन सम्बन्धों की अनैतिकता और धार्मिक अनैतिकता को शामिल करता है।

- यौन अनैतिकता में हर तरह का अभद और गैर कानूनी यौन व्यवहार शामिल है।
- धार्मिक अनैतिकता में मूर्तिपूजा, तांत्रिक विद्या गलत धार्मिक शिक्षा का ही रूप शामिल है। (शिक्षा और गलत शिक्षाओं पर विश्वास करना) और विवाह या धर्म के भीतर हिंसा का कार्य करता है। (उदाहरण के लिए धर्म को धमकियों और तलवार के माध्यम से फैलाना।

यदि मसीही वैवाहिक साथी अनैतिक यौन सम्बन्ध या धार्मिक अनैतिकता करता है। तो निर्दोष साथी को आज्ञा नहीं है कि वह भी वही करे परन्तु अनुमति है कि वह दोषी साथी को तलाक दे। परमेश्वर तलाक से घृणा करता है, परन्तु वह दयावन्त भी है और ऐसी स्थिति की अनुमति भी नहीं दे सकता है जिसमे निर्दोष साथी को अनैतिक यौन सम्बन्धों में घसीटा जाए, आत्मिक अनैतिकता और अमानवीय हिंसा "वैवाहिक विश्वासघात" शब्द के इन आधार पर यीशु मसीह एक मसीह व्यक्ति को तलाक के लिए अनुमति देता है जब उसका या उसके विवाह का साथी यौन अनैतिकता था धार्मिक अनैतिकता का दोषी होता है। निष्कर्ष यह है कि बाइबल बहुत स्पष्ट रूप से सिखाती है कि एकमात्र एक साथी के साथ ही यौन सम्बन्ध वैध है और केवल एक ही वैवाहिक साथी के साथ है(विपरित लिंग के) और फिर मात्र एक ही साथी विवाह के बाद भी बाइबल में चेतावनी देती है कि परमेश्वर यौन सम्बन्धों और व्यभिचारों को न्याय करेगा। उसी प्रकार दुनिया में एकमात्र वैध धर्म परमेश्वर की अराधना है जो खुद को प्रभु यीशु मसीह में पुराने नियम की भविष्यद्वाणीयों द्वारा घोषणा के रूप में प्रकट करता है।

4. जब तलाक के कारण पत्नी व्यभिचारिणी हो जाती है।

पढ़ें मत्ती 5:32।

प्रश्न। वह क्या शब्द है "जो उसे व्यभिचारिणी बनाता है" का मतलब क्या है?

शिक्षा।

(1) मत्ती 5:32 का अनुवाद।

मूल वाक्यांश "व्यभिचारिणी बनाना" (यूनानी: पीआई ओउटन मोई छेउ तेनाई)(संकेतात्मक मनोदयशा, वर्तमान काल, सक्रिय आवाज+क्रिया के साधारण रूप की मनोदशा अनिश्चित काल आवाज) क्रिया की निष्क्रिय आवाज में लिखा गयौ। मत्ती 5:32 का अनुवाद निम्नलिखित रूप से करना चाहिए "जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर(तलाक) भेज दे, वैवाहिक विश्वासघात के मामलों को छोड़कर उसका कारण व्यभिचार को सहना है या उसको व्यभिचार करने के लिए उजागर होने को कारण बनता है। और जो कोई भेजी गई(तलाक शुदा) स्त्री से विवाह करता है वह व्यभिचार करता है।"

(2) तलाक की प्रकिया नहीं, लेकिन तलाक का कारण महत्वपूर्ण है।

हमें "तलाक" (यूनानी: अपोलु साई) और व्यभिचार (यूनानी: मोईछिया) के बीच अन्तर करना चाहिए। यह वह है कि महिला को भेज देना(तलाक देना) और किसी जो ऐसे व्यक्ति के साथ यौन क्रिया करने के बीच जो कानूनी रूप से विवाह का साथी नहीं है। यीशु के दिनों में यहूदियों ने केवल तलाक की प्रक्रिया के बारे में सोचा था न कि विवाह के नियमों के बारे में वे तर्क देते है कि जब पति ने एक पत्नी को तलाक के प्रमाण पत्र को भेज दिया हो, तो विवाह का बन्धन समाप्त हो गया है। और वह दूसरी स्त्री से विवाह करने के लिए आजाद है(और उसके हम बिस्तर हो सकता है)। यीशु ने यहूदियों के तलाक की प्रक्रिया का तिरस्कार किया और परमेश्वर द्वारा दिये गये विवाह के अध्यादेश की पुनरावृत्ति को बहाल कर दिया।

(3) निर्दोष साथी दोषी साथी के व्यभिचार की वजह से भुगतान पडता है और वह इसकी चपेट में आकर कमजोर पड़ जाता है क्योंकि वह जल्दी से एक और रिश्ता शुरु करने के लिए परीक्षा में पडती है।(यीशु भी इसे मत्ती रचित सुसमाचार में व्यभिचार कहता है)।

यदि पत्नी वैवाहिक विश्वासघात नहीं करती है परन्तु उसका पति किसी और कारणों से उसे हमेशा के लिए भेज(तलाक) देता है। तो इस कार्य में पति को दोषी साथी समझा जाएगा(व्यभिचारी) और पत्नी जो तलाक को निर्दोष साथी है।

और वह व्यभिचार के पाप से पीड़ित होगी जो उसके पति ने किया था, तिरस्कृत महसूस करेगी और अकेलापन और गलतफहमी की वस्तु, सहानुभुति की कमी, और अन्य लोगों के द्वारा उपहास किया जाना। किसी के साथ प्रेम प्रसंग के द्वारा वह भी अपने आपको व्यभिचार के लिए उजागर कर सकती है और किसी अन्य पुरुष के साथ रहने के द्वारा या बाद में विवाह का अनुबन्ध करके हो सकता है कि वह अपनी तरफ से विवाह का बन्धन तोड़ दे। और उचित अधिकारियों(उदाहरण के लिए मण्डली) का मामले में उचित समाधान देने से पहले है किसी अन्य व्यक्ति के साथ दूसरी शादी करने की जल्दी करे। इस प्रकार के हालातों में न सिर्फ उसका पति दोषी है परन्तु वह भी व्यभिचार करने की दोषी बन जाती है। यीशु ने पहले

पति की अस्वीकृति को स्वीकार नहीं किया कि साधारणत: उसको तलाक का पत्र देने के द्वारा। एक न्यायपूर्ण तलाक के रूप में क्योंकि इसमें वैवाहिक विश्वासघात शामिल नहीं था। यीशु पत्नी के दूसरे पति के साथ विवाह की भी अनुमति नहीं देते जो वह दूसरे पति के साथ(उचित अधिकारियों के कानूनी फैसले के बिना) वैध तलाक नहीं हुआ है। फिर भी पुरुष को यदि वह उसमें है तो मुख्य जिम्मेदारी और मुख्य अपराध का सहन करता चाहिए क्योंकि वह त्यागी हुई अवस्था में है, उसे तुरन्त किसी और से शादी करने की परीक्षाओं की तरफ झुकाव हो सकता है। उसको भेज(तलाक) देने के द्वारा उसे प्रेम प्रसंग करने से सुरक्षित नहीं रखा है। इत्यादी वह सबसे अधिक दोषी है। क्योंकि पति ही उसको इस हालात में ले गया है जहां वह व्यभिचार करे।

(4) सिर्फ पति ही नहीं बल्कि पत्नी भी कानूनन वजह से तलाक ले सकती है।

मत्ती 5:31-32 का यह बाइबल का खण्ड पुरुषों पर आधारित है। यीशु मसीह कट्टरपन्थी मनोवृत्ति के यहूदियों से बात कर रहा है; जिसमें यह धारणा थी कि केवल पति द्वारा ही अपनी पत्नी को अवैध रूप से तलाक देने के लिए केवल तलाक का पत्र देकर भेज देना उस समस की प्रथा थी। यीशु सिखा रहा है कि जब उसकी पत्नी वैवाहिक विश्वासघात का कार्य करती है तो पति कानूनी रूप से क्या कर सकता है। और वह सिखाता है कि अगर वह वैवाहिक जीवन के विश्वासघात के किसी भी कार्य को नहीं करती है तो पति क्या कर सकता है।

हालांकि, यीशु यह नहीं सिखाता है कि जब पति वैवाहिक विश्वासघात का कार्य अपने जीवन में करता है तो पत्नी क्या कर सकती है या उसे क्या करना चाहिए मत्ती मुख्य रूप से यहूदियों को लिखते हैं जिनके बीच उनके पति द्वारा भड़कीले कारणों से पत्नी की तिरसकार को अच्छी तरफ से जाना जाता था। मरकुस गैर यहूदियों(अन्यजातियों) करे लिखते हैं और उनके सुसमाचार में यह स्पष्ट हो कि यीशु ने पतियों के बारे और उसके बारे में जो कुछ भी कहा है।

- **पतियों के लिए** 'जो कोई अपने को बचाने के लिए तो वह अपने पति के विरुद्ध पाप करती है।' (सकेतात्मक मनोदशा, वर्तमान काल, बीच की आवाज)(एक सम्बन्ध को तोड़ने के द्वारा और दूसरे सम्बन्ध में जोड़ना)

- इसलिए जोर कोई मत्ती पतियों को सिखाता है वह शिक्षा उतनी ही पत्नियों के लिए वैध है। और इसलिए पत्नी को भी अनुमति है कि वह अपने पति से न्यायिक रूप से तलाक ले सकती है। जब उसका पति उसके साथ विवाह में विश्वास घात का कार्य करे।

5. जब विवाह "व्यभिचार" बन जाए।

पढ़ें मत्ती 5:32ब।

प्रश्न। इस शब्द का अर्थ क्या है? "जब कोई किसी तलाकशुदा स्त्री से विवाह करता है व्यभिचार करता है।"

शिक्षा।

(1) यीशु अवैध तलाक के जल्दबाजी में किये गये पुर्नविवाह को व्यभिचार मानते है।

जब यीशु कहता, "जो कोई अवैध रूप से तलाकशुदा स्त्री से विवाह करता है वह व्यभिचार करता है।" (यूनानी: मोईछाटई) उनका यह अर्थ नहीं है कि वह स्त्री फिर से विवाह नहीं कर सकती है। यदि यह अर्थ होता तो यीशु बेकसुर को दोषी व्यक्ति को दण्डित कर देते। मत्ती 5:31-32, यीशु व्यवस्थाविवरण 24:1-4 के सन्दर्भ में बात कर रहें हैं। उस खण्ड में यह स्पष्ट है कि बेकसूर पत्नी जिसे उसके पति द्वारा अवैध रूप से त्याग(तलाक) दिया हो तो अत: और कानूनी रूप से फिर से शादी कर सकती है।

जब दोषी पति अपनी निर्दोष पत्नी को तलाक देता है तो दूसरे पुरुष को उसे भरपूर समय और अवसर देना चाहिए ताकि उसका दोषी पति अपनी गलती को सुधारे और अपनी पत्नी के से मेल कर ले। दूसरा पुरुष उस निर्दोष से विवाह की जल्दबाजी न करे। पर त्यागी हुई स्त्री। यदि पुरुष करता है तो वह अवैध तलाक में शामिल हो जाता है और साथ ही व्यभिचार में जिससे उसे जल्दबाजी में शादी नहीं करनी चाहिए थी(मत्ती 5:32)इसका अर्थ है कि पुरुष तुरन्त उस स्त्री से विवाह की जल्दी न करे साथ स्त्री भी तुरन्त किसी से विवाह करने की परीक्षा में पड़ने के झुकाव की तरफ न जाए। कारण यह है कि पहला दोषी पति, जिसने उसे अवैध कारणों के द्वारा भेज दिया, अभी वह पश्चाताप करे और उसे समय और अवसर देना चाहिए कि वह अपने पाप और व्यभिचार को सही कर सके और अवैध तलाक और अपनी पिछली पत्नी से मेलमिलाप कर सके। यीशु ने यह नहीं कहा कि कितना समय देना चाहिए उसने इस बिन्दू को इससे आगे विस्तार रूप में नहीं बताया।

(2) यीशु ने तलाक और पुर्नविवाह के बारे में सबकुछ नहीं सिखाया।

इस खण्ड में मुख्य बात यह है कि पुरुषों को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए और यह नहीं कि स्त्री को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए यह दिखाता है कि बाइबल के इस खण्ड में यीशु ने विवाह और पुर्नविवाह के बारे में सबकुछ सिखाने का इरादा नहीं था, यीशु ने जो किया वह उसके दिनों के दौरान प्रचालित नैतिकता के ढीलेपन का प्रतिकार करना था उन्होनें विशेष रूप से उस कार्य का आसानी से प्रतिकार किया जिसके वजह से यहूदी पुरुषों ने अपनी पत्नियों को भेजना(तलाक देना) शुरू कर दिया था, उसने तलाक को प्रोत्साहित किया, पुराने नियम की व्यवस्था की गलत समझ का खण्डन किया, व्यवस्था के सही अर्थ की पुष्टि की(मत्ती 5:17-18), दोषी पक्ष की निन्दा की, बेकसूर पक्ष का बचाव किया और इसके दौरान, परमेश्वर के आदेश के अनुसार विवाह के बन्धन की पवित्रता और हिंसा को बरकरार रखा(मत्ती 5:31-32, 19:3-6)!

पवदूसरे बाइबल खण्ड(1 कुरिन्थियों 7) में प्रेरित पौलुस विवाह और तलाक के बिन्दुओं पर व्याख्या की है।

ग. तलाक के विषय में यीशु मसीह द्वारा दी गई शिक्षाओं को पौलुस प्रेरित ने मसीही कलीसिया में लागू किया।

परिचय। जब मसीहीयों ने गैर यहूदी राष्ट्रो(अन्यजातियों) में सुसमाचार प्रचार किया उन्होनें तलाक और पुर्नविवाह के बारे में नई परेशानी का सामना करना पड़ा। इस मिशनरी स्थिति में, एक "मिश्रित विवाह" वह

हैं जिसमें पति या पत्नी अकेले विवाह के बाद मसीह बन जाते हैं। कुरिन्थियों के विश्वासी यह जानना चाहते थे क्या मसीही वैवाहिक साथी को अपने अविश्वासी वैवाहिक साथी को तलाक देना चाहिए की नहीं। इसलिए प्रेरित पौलुस पवित्र आत्मा की अगुवाई मे तलाक और पुर्नविवाह के बारे में और अधिक निर्देश देता है। (1 कुरिन्थियों 7:40) वह सिखाता है कि आत्मिक असमानताओं के आधार पर मसीहीयों को तलाक देने की अनुमति दी जो सकती है वह है, असमान्य का होना क्योंकि वैवाहिक जीवन का दूसरा साथी मसीह नहीं है(1 कुरिन्थियों 7:12-16)

1. एक निश्चित विवाह जिसमें अविश्वासी साथी विश्वास करने वाले साथी के साथ रहने के लिए सहमत होते हैं।

खोजें और चर्चा करें। उस निश्चित विवाह में क्या करना चाहिए जिसमें अविश्वासी साथी(गैर मसीही) विश्वासी साथी के(मसीही) साथ एकसाथ रहने के लिए सहमत हो?

पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 7:12-14।

ध्यान दें। इसकी व्याख्या करनी चाहिए कि पौलुस प्रेरित स्पष्टता के साथ सिखाते हैं कि मसीही विश्वासी को अनुमति नहीं है कि वह किसी अविश्वासी या किसी दूसरे धर्म पर विश्वास रखने वाले के साथ विवाह करे(व्यवस्थाविवरण 7:3-4, 1 कुरिन्थियों 7:39, 2 कुरिन्थियों 6:14-7:1)।

हालांकि, कुछ लोग जबकि वे गैर मसीही ही थे विवाह हो चुका था और उसके बाद में मसीही बनते हैं। 1 कुरिन्थियों 7:12-14 में पौलुस प्रेरित इस सन्दर्भ में तलाक और पुर्नविवाह के बारे में बातें करता है। यदि मैं बातें करता है। यदि विश्वासी साथी के साथ रहने की इच्छा रखता है, तो विश्वासी साथी गैर विश्वासी साथी से तलाक न ले यह सहभागिता में निरन्तर बनें रहें यह बात परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि अविश्वासी साथी और बच्चें जो विवाह में हुए हैं उस विश्वासी के नजदीकी सहभागिता की वजह से पवित्र है। पवित्र का अर्थ यह नहीं कि मसीह में परमेश्वर के सामने "पवित्र" जैसे 1 कुरिन्थियों 1:30 में है। क्योंकि उस प्रकार की पवित्रता की भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिए नहीं की जा सकती। बल्कि इसका अर्थ है कि "अलग किये हुए" इसको इस प्रकार से महसूस किया जा सकता है कि अविश्वासी पति उसके बच्चें अविश्वासियों के साथ में अपना घर महसूस नहीं करता।

जबकि विश्वासी साथी के द्वारा अविश्वासी साथी और बच्चें विश्वासियों के समुदाय(कलीसिया) से जुड़ जाते हैं और वे उस समुदाय से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार के विवाह मे बच्चें मसीही मण्डली के अन्दर उनका पालन पोषण किया जाता है और हो सकता है कि अविश्वासी साथी कलीसिया में जाना आरम्भ कर दे।

2. एक निश्चित विवाह जिसमें अविश्वासी साथी विश्वास करने वाले साथी के साथ रहने के लिए सहमत नहीं हो सकते।

खोजें और चर्चा करें। तब क्या किया जाना चाहिए जब एक अविश्वासी साथी(गैर मसीही) विश्वासी साथी(मसीही) के साथ रहने के लिए सहमत नहीं हो सकते।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 7:15-16।

ध्यान दें। एक निश्चित विवाह जिसमें एक अविश्वासी साथ अपने विश्वासी साथी के साथ मिलने के लिए सहमत न हों, ऐसे मे तलाक होना पक्का है। यदि अविश्वासी साथी अपने विश्वासी के साथ विवाह में बना नहीं रहना चाहता तो विश्वासी साथी के अविश्वासी साथी को तलाक लेने की अनुमति दे देनी चाहिए चाहे फिर वह पुरुष हो या स्त्री 1 कुरिन्थियों 7:15-16 सिखाता है, "यदि अविश्वासी छोड़ता है तो उसे ऐसा करने दे। एक विश्वासी पुरुष या स्त्री इस प्रकार के परिस्थिति में विवाह के बन्धन(दास) बाध्य नहीं है। क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें शान्ति से रहने के लिए बुलाया है।" यह खण्ड शाब्दिक रूप से कहता है। "यदि अविश्वासी स्वयं को अलग करता है या तलाक लेता है, तो उसे अलग होने दे या तलाक लेने दें। इस मामले में विश्वासी भाई-बहन पास की तरह रहने के लिए बाध्य नहीं है।" गैर मसीही पूर्णत: तलाक के लिए जिम्मेदार है, और मसीही व्यक्ति नहीं है। गैर मसीही लोगों को अलग चला जाना या तलाक देने से रोकने के लिए मसीही व्यक्ति का कोई दायित्व नहीं है।

क्यों विश्वासी साथी को अविश्वासी साथी को तलाक के लिए अनुमति देनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने मसीहीयों को शांतिप्रिय जीवन जीने के लिए बुलाया है यहां पर "शान्ति" शब्द कर अर्थ घरेलू परेशानियों और झगड़ों की अनुउपस्थिति नहीं है। शान्ति जिसके लिए परमेश्वर ने मसीहीयों को बुलाया है(1 कुरिन्थियों 7:15) उसका परिणाम उद्धार है। और बाइबल के परमेश्वर और लोगों के साथ शान्ति की अगुवाई में आगे बढ़ें, शान्ति को भंग करना या इस शान्ति के विषय में धमकी देना आत्मिक असंगति कहलाता है। यह शान्ति पूर्णत: कहलाता है। यह शान्ति तब भंग की जाती है जब विश्वासी पूर्णत: कलीसिया के हर कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहता है या जब गैा मसीही तलाक चाहता है ता विश्वासी को तलाक के लिए रोक थाम नहीं करनी चाहिए परन्तु तलाक कि जरूर अनुमति देनी चाहिए।

जब गैर-विश्वासी तलाक नहीं चाहता है और विश्वासह को तलाक देने की मना है, फिर भी इस गैर-मसीही के मामले में जो तलाक नहीं चाहता परन्तु फिर भी मसीही और उनके बच्चों के दुर्व्यवहार जारी है जो मसीही व्यक्ति को अनुमति है कि वह उस गैर-मसीही आत्मिक अनैतिकता के बुनियाद पर तलाक दे देना चाहिए जो हिंसा के कार्य को सम्भलित करता है आत्मिक विसंगत की बुनियाद पर तलाक कर सकता है जो परमेश्वर के हमारी शान्ति को भंग करती है और दूसरे लोगों के साथ भी शान्ति भंग कर देते हैं। सरकारी अधिकारियों और कलीसिया के अधिकारी ज्यादातर निर्णय लिया की उनके विवाह का अन्त हो जाए। मसीहियों को तलाक को रोकना नहीं चाहिए।

घ. तलाक के विषय में जो शिक्षा पुराने नियम में है पतरस में उसको नये नियम में लागू किया गया।

जिस प्रकार से एक पति अपनी पत्नी के साथ व्यवहार करता है वे उसके परमेश्वर और प्रार्थना के साथ सहभागिता पर होकर जबरदस्त सकारात्मक प्रभाव डालती है। मलाकी 2:13-15 कहता है। यदि कोई व्यक्ति

किसी वैवाहिक साथी का विश्वास तोड़ता है तो परमेश्वर उसके प्रार्थना पर ध्यान नहीं देता है और न ही उसकी पुकार जो परमेयवर के सामने रोते हुए करता है और उसके भेंट पर ध्यान नहीं देगा!

1 पतरस 3:7 पतरस प्रेरित कहता है "वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझ कर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस है, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाए" यदि कोई पति अपनी पत्नी को कठोरता से और अनादी के साथ व्यवहार करे, परमेश्वर उसी प्रकार उसकी प्रार्थनाओं को तिरस्कार कर देगा यह उन पतियों के विरूद्ध चेतावनी है जो अपनी पत्नियों के साथ हिंसात्मक तरीके से अपने विवाह में अपनी इच्छा जबरदस्ती पूरी करना चाहते हैं। यह पत्नियों के लिए भी चेतावनी है जो अपनी जीभ की धार लगाकर अपने पतियों को चोट पहुंचाती है(1 पतरस 3:1-6)। इसीलिए, विवाह के बीच में व्यवहार और रवैये का हमारे सम्बन्धों का प्रभाव बहुत बड़ा होता है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना को सुनता है कि नहीं।

ड. परिवर्तन, पुर्नविवाह और तलाक बाद अगुवापन।

1. तलाक के बाद परिवर्तन।

परिचय। जबकि व्यभिचार और तलाक बहुत बड़े पाप है सुसमाचार सामर्थी है कि जिन्होनें व्यभिचार किया है उनके जीवनों को बदल सके और या फिर जिसने अवैध रूप से तलाक देने का दोषी हो।

(1) वास्तविक पश्चाताप क्षमा की तरफ अगुवाई करता हूँ।

पढ़ें नीतिवचन 28:13, प्रेरित के काम 13:38-39, यूहन्ना 1:9, मत्ती 4:5-7।

खोजें और चर्चा करें। ऐसे व्यक्ति से क्या किया जाए जो व्यक्ति व्यभिचार या अवैध रूप से तलाक लिया हो?

ध्यान दें। जो कोई वास्तव में अपने पाप से पश्चाताप करता है परिवर्तित होना और उनके जीवन में सुधार से क्षमा प्राप्ति और परिवर्तन होता है। परमेश्वर पश्चातापी पापी पर दया करेगा वह क्षमा करेगा और टूटे हुए जीवनों को परिवर्तित पवित्रीकरण के द्वारा।

हालांकि, एक मसीही व्यक्ति परमेश्वर के दया और अनुग्रह का हम दुरुपयोग न करे कि पहले स्वईच्छा से अपने वैवाहिक साथी को तलाक देकर और उसके बाद परमेश्वर से क्षमा प्राप्ति करना चाहता है। इस प्रकार का कार्य उसी के समान है मानो आप परमेश्वर की परीक्षा ले रहें हैं।

(2) व्यभिचार में पढ़ें लोगों को यीशु कैसे देखता है।

पढ़ें लूका 7:36-50, यूहन्ना 4:16-19, यूहन्ना 8:1-11।

खोजें और चर्चा करें। यीशु का उदाहरण हमें व्यभिचार या वैध तलाक की स्थिति में क्या करना सिखाता है।

ध्यान दें। पुराने नियम में परमेश्वर पहले ही कह चुके हैं जब दाऊद ने अपने व्यभिचार और पश्चाताप किया था(2 शमूएल अध्याय 11 और 12, भजन संहिता 51) "मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है। वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा"(प्रेरितो के काम 13:22)।

यीशु खोए हुओ को छुड़ाने और उद्धार करने आएं है(लूका 5:31-32, 19:10) यह उन लोगों का भी शामिल करता है जो व्यभिचार में पड़ें हैं। यीशु ने उस स्त्री को जो नगर में रहकर पापमय जीवन जी रही थी उसे दोषी नहीं ठहराया नहीं उसे दण्ड दिया(लूका 7) यीशु ने सामरी स्त्री को दोषी न ठहराया जो व्यभिचार में जी रही थी, इसके बावजूद उसने स्वयं के उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट किया और उसका जीवन पूर्णत: बदल गया(यूहन्ना 4) यीशु उस स्त्री को भी दोषी नहीं ठहराया जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी इसके बावजूद उसने उसे चेतावनी दी की वह अपने पापमय जीवन को छोड़ दे(यूहन्ना 8)।

(3) यदि परमेश्वर इन्हें बाइबल में परिवतित कर सकते है तो वह उन्हें भी आज परिवर्ति कर सकता है जो व्यभिचार में पड़ें हैं।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 5:1-13, 6:9-11, 7:11, 2 कुरिन्थियों 2:5-11।

खोजें और चर्चा करें। सभी प्रकार की यौन अनैतिकता के सम्बन्ध में यीशु मसीह के सुसमाचार की सामर्थ क्या है?

ध्यान दें। यीशु मसीह के सुसमाचार में सामर्थ है कि वह यौन अनैतिकता में पड़ें लोगों को व्यभिचारियों को, अवैध रूप से तलाक दिये गये लोगों को परिवर्तित कर सकता है। 1 कुरिन्थियों 5:1-13 में हम पढ़ते हैं कि कुरिन्थ के लोग कितने भ्रष्ट और पति थे।

और 1 कुरिन्थियों 6:9-11 में हम सब प्रकार के यौन अनैतिकता में पड़े लोगों के ऊपर परमेश्वर के न्याय के बारे में पढ़ते है। धोखा न खाओ, न वेश्यागामी न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी पापी... परमेश्वर के राज्य के वारिस होगें।

परन्तु पौलुस प्रेरित भी कहता है कि जिन लोगों ने ऐसा जीवन जिया है वे भी उद्धार पा सकते हैं और पूर्णत: बदल सकते हैं, वह लिखता है "और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।"

इसलिए, कलीसिया के प्राचीनों को मण्डली में मसीहीयों के बीच में व्यभिचार और अवैध तलाक को अनुशासित करना चाहिए(1 कुरिन्थियों 5:1-8)।

वे अपना लक्ष्य बना लें कि अपराधी पश्चाताप करे और उसका जीवन बदल चुका है(2 कुरिन्थियों 2:5-11)

सबने पाप किया, सबको परमेश्वर की दया और अनुग्रह कि आवश्कता है कि वे उद्धार पाए और बदल सके। जिन लोगों ने व्यभिचार और तलाक दिया है और उसके बाद जिसने वास्तविक पश्चाताप किया है वे परमेश्वर से दया प्राप्त कर सकते हैं कि वे क्षमा पा सके, और अनुग्रह से बदल सके(यूहन्ना 1:8-2:2)

यदि दोनों तलाकशुदा ने पुनः विवाह नहीं किया है तो उन्हें अपने पहले जीवन साथी के साथ मेल मिलाप करने की कोशिश करनी चाहिए अपने पहले शादी को बहाल करने की कोशिश करनी चाहिए(1 कुरिन्थियों 7:11)।

2. तलाक के बाद पुर्नविवाह।

परिचय। तलाक के बाद पुर्नविवाह मसीहियों के बीच में एक विराधाभास वाला विषय है। गम्भीर मसीही अगुवे अपने अनुवाद करते है तौभी जो प्रमाण बाइबल के प्रमुख खण्डों को लेकर अन्तर की व्याख्या करते हैं तौभी जो प्रमाण बाइबल में दिये गए हैं मसीही लोग उस पर जरूर विचार करें और मण्डली में इस विषय में क्या करना चाहिए। बाइबल हमें दो मुख्य सिद्धान्त सिखाती है कि तलाक के बाद पुर्नविवाह के बारे में क्या करना चाहिए, निम्नलिखित है।

(1) तलाक में दोषी व्यक्ति के लिए शिक्षा।

पढ़ें मरकुस 10:11-12, 1 कुरिन्थियों 7:10-11।

खोजे और चर्चा करें। तलाक की अवस्था में दोषी साथी को क्या करना चाहिए?

ध्यान दें। ज्यादातर विवाहों में कुछ हद तक दोनों जीवन साथी दोषी होते हैं उनको विवाह तलाक तक पहुंच जाता है। हो सकता है कि वे संसार में अपने कामों में बहुत व्यस्त हो गये अपने विवाह और परिवार को पर्याप्त समय और ध्यान नहीं दे पाये, शायद उन्होनें अपने विवाह के जीवप को बनाये रखने के लिए कोई भी कदम नहीं उठाए या अपने झगड़ो को बाइबल संगत नहीं सुलझाया दोनों ही तरफ पश्चाताप की आवश्यकता है।

फिर भी, यीशु और पौलुस उन साथियों के बारे में बताते जो स्वयं को किसी कारण जो मेरा वैध कारण ऊपर बताए गये उन्हें छोड़कर यदि अलग हुए है। तो दोषी साथी से मेल कर ले या अविवाहित मसीही को आज्ञा देते है कि वे विवाहित बनें रहें।

यीशु ने कहा "जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे तो वह व्यभिचार करती है"(मरकुस 10:11-12) यीशु यहां दोषी साथी के बारे में बोल रहे हैं जो अवैध रूप से अपने वैवाहिक साथी को तलाक दे देते हैं और फिर अवैध तरीके से दूसरे पुरुष या स्त्री से विवाह कर लेते है। क्योंकि यीशु अवैध तलाक को मान्यता नहीं देते, उसके बाद वह अवैध तलाक और अवैध पुर्नविवाह को व्याभिचार की श्रेणी में गिलता है। पौलुस प्रेरित चेतावनी देता है कि बिना पश्चाताप किया हुआ व्यभिचार परमेश्वर के राज्य का वारिस नहीं हो सकता।(1 कुरिन्थियों 6:9-11)।

मत्ती रचित सुसमाचार में यीशु यहूदियों की स्थिती को सम्भोदित करते हैं जहां ज्यादातर पुरुष, स्त्रियों को तलाक देते हैं। 1 कुरिन्थियों में पौलुस अन्यजातीयों की स्थिती को सम्भोदित करते है। जहां कि स्त्रियां ज्यादा आजाद थी और वे अक्सर अपने पतियों को तलाक दे देती थी फिर भी इन दोनों मामलों में पति-पत्नियों के बारें में जो कहा गया है वह विपरीत लिंग के लिये भी उतना ही सत्य है।

एक मसीही साथी द्वारा एक स्वेच्छा से अवैध गैर-कानूनी तलाक के बाद परमेश्वर द्वारा पहला विवाह रद्द नहीं ठहरा है। दोषी वैवाहिक साथी शायद पुर्नविवाह न करे पर उसे कदम बढ़ाने चाहिए कि वह अपने बेकसुर वैवाहिक साथी से मेल मिलाप कर ले, यदि वे अपने बेकसुर वैवाहिक साथी के साथ मेल मिलाप न करना चाहे तो वे दोनों ही अविवाहित बनें रहें।

फिर भी यह खण्ड इसकी व्याख्या नहीं करता व्यभिचार तलाक की अवस्था अब मरम्मत के बाहर है तो क्या करना चाहिए। जब दोषी साथी अपने तलाक से पश्चाताप करता है तब तक निर्दोष साथी विवाह कर चुका होता है। कुछ मसीह अगुवे इस बात की वकालत करते हैं कि दोषी साथी फिर भी विवाह न करे न दण्ड पर जोर देते कि दोषी साथी को पापी व्यवहार के परिणाम को भुगते।

दूसरे मसीह अगुवे कहते हैं कि पश्चातापी व्यभिचारी पुनः विवाह कर सकता है। वे सिखाते हैं कि परमेश्वर दयावन्त है। वह पश्चातापी व्यभिचारी को क्षमा कर देगा और उसके पापों को फिर याद न करेगा(लूका 7:47-50, 1 कुरिन्थियों 5:9-11, इब्रानियों 8:12)। इसके अतिरिक्त, 1 कुरिन्थियों 7:9 सिखाता है कि "विवाह करना कामातुर रहने से भला है। यह सिद्धांत मूलरूप से वास्तविक दोष पर लागू होता है परन्तु अब पश्चातापी और क्षमा प्राप्त व्यभिचारी है।"

(2) विवाह में निर्दोष व्यक्ति के लिए शिक्षा।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 7:39, 7:15, 7:9।

खोजें और चर्चा करें। तलाक की अवस्था में निर्दोष साथी को क्या करना चाहिए?

ध्यान दें। तलाक की अवस्था में अविवाहित रहने के लिए बाध्य नहीं है।

पौलुस प्रेरित सिखाता है, "एक स्त्री परमेश्वर की व्यवस्था द्वारा(एक दास की तरफ)(यूनानी: डेडेटाई)(संकेतात्मक मनोदशा, पूर्व काल निष्क्रिया आवाज) अपने पति से बन्धी है जब तक वह जीवित है"(1 कुरिन्थियों 7:39) परन्तु यदि उसका पति मर जाए, तो वह किसी भी विवाह करने के लिए आजाद है जिससे वह चाहे, परन्तु वह व्यक्ति प्रभु का होना चाहिए। यहां शब्द बन्धी का वास्तविक अर्थ है कि वह निरन्तर विवाह के साथी के साथ परमेश्वर की व्यवस्था में बन्धी रहे। वैवाहिक स्थिति के बन्धन को सिर्फ मृत्यु ही वैवाहिक साथी से विवाह को रद्द कर सकती है। और जीवित पति को आजादी देती है कि वह पुर्नविवाह करे 1 कुरिन्थियों 7:39, मदद करता है 1 कुरिन्थियों 7:15 की व्याख्या करने में।

वह यह भी सिखाता है, "यदि अविश्वासी छोड़ता है तो उसे ऐसा करने दो। विश्वासी भाई और बहन बाध्य नहीं है(दास की तरह)(यूनानी: ओउ डीडोआऊलोटाइ)(संकेतात्मक मनोदशा, पूर्ण काल, निष्क्रिय आवाज) इस प्रकार के हालातों में"(1 कुरिन्थियों 7:15) गैर मसीही तलाक के लिए जिम्मेदार है। "बन्धी नहीं" शब्द का वास्तविक अर्थ है कि निरन्तर दास की तरह बन्धे नहीं रहना है अपने असली विवाह की स्थिति में बने रहने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार निर्दोष मसीही साथी अविवाहित नहीं बने रहना है कि पूरे जीवन भर इसका इन्तजार करे कि कोई घटना घटित होगी और वह विश्वासी बन जायेगा और फिर वे अपने पुराने विवाहिक सहभागिता फिर से जुड़ जाये। तौभी, निर्दोष मसीह व्यक्ति को पूर्ण समय देना चाहिए कि उसका दोषी साथी पश्चाताप करे और टूटे वैवाहिक सम्बन्ध को फिर से बहाल कर सके(मत्ती 5:32)। कब तक

निर्दोष मसीह इन्तजार करे इसका समय निर्धारित नहीं है। फिर भी, गैर मसीह द्वारा तलाक परमेश्वर की दृष्टि में विवाह के बन्धन को रद्द कर देता है। और मसीह व्यक्ति पूर्ण रूप से आजाद है कि वह पुनः विवाह कर ले, परमेश्वर उसे वैवाहिक बन्धन फिर नहीं समझता।

यह उसके साथ सहमति पत्र है जो पौलुस ने 1कुरिन्थियों 7:1-9 में लिखा है। निर्दोष मसीही साथी ने शायद वरदान न पाया है। और वह कामातुर रहने लगे इसलिए, जब तक वह पुरुष या स्त्री विवाह न कर ले वे यौन अनैतिकता में गिर जाए परिस्थिति भला यह है कि मसीही व्यक्ति फिर से विवाह कर ले।

निष्कर्षः- 1कुरिन्थियों 7:39, मददगार है कि 1कुरिन्थियों 7:15 की व्याख्या कि जा सके।
विवाह बन्धन को कानूप तरीके से हठाया जा सकता है।

- वैवाहिक साथी की मृत्यु
- स्वेच्छा से गैर विश्वासी द्वारा तलाक
- विवाह स्थिति में विश्वासघात(यौन सम्बन्धों और धार्मिक अनैतिकता, हिंसा के कार्यो का समलित होना) मसीह या गैर मसीह साथी द्वारा।

इन तीनों हालातों में मसीही व्यक्ति आजाद है कि वह फिर से विवाह कर ले।

निर्दोष साथी दोषी साथी को पूर्ण समय दे कि वह पश्चाताप कर सके और वैवाहिक रिश्ते को बहाल कर सके। तौभी काफी समय देने के बाद भी दोषी साथी पश्चाताप न करना चाहे, तो निर्दोष साथी बाध्य नहीं है कि वह अविवाहित रहे। न तो यीशु और न ही पौलुस समय सीमा बताते हैं कि उन्हें कितने समय तक रूकना चाहिए(इब्रानियों 4:7-8)।

3. तलाक के बाद अगुवापन।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 21:7,14, 1 तीमुथियुस 3:2।
खोजें और चर्चा करें। अगुवेपन में तलाकशुदा व्यक्ति के बारें में बाइबल क्या सिखाती है?
ध्यान दें। मसीही अगुवे इस विषय में विभाजित है।

(1) पुराने नियम में याजक।

पुराने नियम के समय में, पुराने नियम का एक याजक निर्दोष तलाकशुदा स्त्री शायद विवाह ने करे(लैव्यव्यवस्था 21:14, यहेजकेल 44:22)।

(2) नये नियम में प्राचीन।

नये नियम के समय में, प्राचीन बनने के लिए आवश्यकता है कि "वह एक ही पत्नी का पति हो" इस आवश्यकता का अर्थ में नहीं है कि विवाहित पुरुष ही हो, हो सकता है कि प्राचीन अविवाहित पुरुष हो परन्तु अविवाहित होने की दशा में वह शुद्धता का उदाहरण प्रस्तुत करें(1 तीमुथियुस 5:1-2) परन्तु यदि प्राचीन विवाहित है तो उसकी *एक* ही पत्नी होनी चाहिए! यह आवश्यकता यह नहीं सिखाती की प्राचीन

पुनः विवाह नहीं कर सकता यदि उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाए तो वह पुनः विवाह कर ले परन्तु सिर्फ विश्वासी स्त्री से(1 कुरिन्थियों 7:39) परन्तु विवाहित पुरुष होने के नाते वह अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्यता का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करें।

अपनी एक पत्नी के साथ वह किसी भी परिस्थिति में बहुविवाह में शामिल नहीं हो सकता और न ही रखैल या दूसरी पत्नी रखने में। वह किसी भी परिस्थिति में व्यभिचार यौन अनैतिकता जिसमें अन्य महिलाओं के छेड़कानी करता क्योंकि यह प्रेम प्रसंग का दिखावा है, और जिद्द के माहौल में प्यार स्वार्थपरता में शामिल नहीं हो सकता है। और संयम की कमी(उत्पत्ति 3:1-5, 2कुरिन्थियों 11:1-2, 2तीमुथियुस 3:1-6)।

(3) तलाक के बाद अगुवापन।

प्रश्न यह है कि जिसका पहले तलाक हो चुका है हो सकता है कि उसे अगुवापन के औदे का दिया जाना तलाक के पश्चात पुर्नविवाह करना मण्डली विचारों एवं तर्क पर निर्भर करता है। कुछ मसीही अगुवे इस बात पर सहमत होते है कि पहले जिसका तलाक हुआ है वह कभी भी मण्डली में अगुवा बनने के कार्य के बारे में न सोचें।

दूसरे अगुवे सोचते है यदि व्यक्ति निर्दोष है और तलाक से निर्दोषता से पीड़ित है, तो वह अगुवे बनने के हर क्षेत्र में योग्य हैं। तब उसे अगुवेपन के कार्य में नियुक्त किया जा सकता है(झुण्ड का अगुवा प्राचीन शिक्षक)।

ज्यादातर मसीही अगुवे इस बात से सहमत होते है कि यदि कोई व्यक्ति तलाक का दोषी है तो उसे अगुवेपन के औदे पर नियुक्त नहीं करना चाहिए।

हालांकि, कुछ अगुवे यह महसूस करते है कि तलाक दोषी में अपने पाप से पश्चाताप करके कई सालों के प्रमाणित किया है। और यह कि उसका जीवन बदल चुका है। उसके बाद मण्डली में उसे अगुवापन का कार्य दिया जा सकता है। वे पश्चातापी व्यभिचारी के ऊपर परमेश्वर की दया पर जोर देते हैं। "क्योंकि जिसने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा, दया न्याय पर जयवन्त होती है"(याकूब 2:13) बाइबल तलाक के बाद अगुवेपन के मुद्दे पर किसी प्रकार की कोई बातचीत नहीं करती। इसलिए हर स्थानीय कलीसिया के प्राचीन इस विषय पर अन्तिम फैसला ले लें और मण्डली के सारे सदस्य इस निर्णय को आदर पूर्वक माने।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2. "आत्मिक वरदानों के अनुसार सेवा करना" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को - **प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।**

3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। 1यूहन्ना 4-5, 2यूहन्ना और 3यूहन्ना** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. **याद करें। श्रंखला ज का अवलोकन: "मसीही माता-पिता"** (1)खर्च करने के द्वारा प्रेम करना 2कुरिन्थियों 12:1ब-15अ। (2)हर क्षेत्र में विकास के नीतिवचन 28:6। (3)परमेश्वर के वचन को सिखाएं। व्यवस्थाविवरण 6:6-7। (4)प्रभु में उन्नति करें। इफिसियों 6:4। (5)अनुशासन के द्वारा प्रेम करें। नीतिवचन 13:24।

5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 19** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।

6. **प्रार्थना**। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें** । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।